* श्रीः *

लग्न जातक ।

भाषा टीका सहित

लेखक—

पं० महाराजदीन दीक्षित ।

प्रकाशकः—

स्टार आफ इण्डिया प्रेस,

पांडे हौली, बनारस सिटी ।

मूल्य ≡)॥

॥ श्रीः ॥

लग्नजातकम् ॥

भाषाटीका सहितम् ॥

तुलालिकुम्भोजकुलीरलग्ने चेद्यं प्रसूता गृहपूर्वद्वारे ॥
कन्याधनुर्मीननृयुग्मलग्नेस्यादुत्तरद्वारिप्रतीचिगोरथः॥ १ ॥

जन्म समय यदि तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मेष वा कर्क लग्न हो तो प्रसूता के घर का द्वार पूर्वमुख का जानना, कन्या, धन, मीन, वा मिथुन लग्नों में बालक का जन्म हो तो गृहद्वार उत्तरमुख का और बृष लग्न में पश्चिम मुख का कहना ॥ १ ॥

मृगारिलग्ने मकरे तथापि भवेत्प्रसूता गृहदक्षिणस्याम् ॥
एवंहिलग्नात्परिचिन्तनीयं सूती गृहद्वारमिदंप्रदिष्टम् ॥ २ ॥

सिंह, मकर में प्रसूता (जच्चा) का घर दक्षिण मुख का होता है, ऐसे तात्कालिक लग्न से सूतिका

के घर का द्वार निश्चय करके कहना चाहिये ॥ २ ॥

मेषालिकर्कघटकुम्भजऐन्द्रभागे जीवज्ञवे मनितथोत्तर-भागके च ॥ नक्रे हरौ यमदिशास्तु वृषे प्रतीच्या तद्वास्तु-नीतिवसतिं प्रवदेत्प्रसूत्याः ॥ ३ ॥

मेष, वृश्चिक, कर्क, तुला, कुम्भ ये राशि लग्नमें हों अथवा इनका नवांश जन्म समय में हो तो वास्तु से पूर्वभाग में जन्म कहना और धन, मीन, मिथुन, कन्या ये लग्न में हों अथवा इनके नवांश जन्म समय में हों तो वास्तु से उत्तरभाग में तथा मकर वा सिंह लग्न में हो अथवा इनका नवांश हो तो वास्तु से दक्षिणभाग में, बृष लग्न हो अथवा बृष का नवांश हो तो वास्तु से पश्चिम सूतिका घर कहना चाहिये ॥ ३ ॥

मीने मेषे च द्वे भार्ये चत्वारि बृषकुम्भयोः ॥
मकरे मिथुने पंचबाणाश्च धनकर्कयोः ॥
अन्यलग्ने भवेत्त्रीणि प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ ४ ॥

मीन और मेष लग्न में जन्म हो तो सूतिका के निकट दो स्त्री, बृष कुम्भ लग्न में जन्म हो तो चार,

मकर, मिथुन, धन और कर्क लग्न में पाँच अन्य (सिं० क० तु० बृश्चि०) लग्नों में जन्म हो तो उपसूतिका प्रसूता (जच्चा) के समीप तीन स्त्री होवें ऐसा पंडित जन कहते हैं ॥ ४ ॥

लग्नचन्द्रान्तर्गतस्थैर्ग्रहैस्तत्रोपसूतिकाः ॥
बहिरन्तश्च चक्रार्द्धे दृश्यादृश्येऽन्यथापरं ॥ ५ ॥

जन्म समय लग्न और चन्द्रमाके बीचमें जितने ग्रह विद्यमान हों उतनीही स्त्रियां सूतिका के समीप कहनी और चक्रार्द्ध अर्थात् लग्नसे सातवें स्थान पर्यंत जितने ग्रह स्थित हों उतनी स्त्रियां समीप भीतर जानना तथा आठवें स्थान से बारहवें स्थान पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी स्त्रियां सूतिकाके घरके बाहर होंगी ॥ ५ ॥

अग्रे चन्द्रे ग्रहमात्रदृष्टे निर्जनप्रसवः ॥

लग्न में चन्द्रमा हो और कोई भी ग्रह देखता न हो तो जन्म समय वहाँ कोई नहीं रहा ऐसा कहना ॥

स्वोच्चवक्रोपगैस्त्रिघ्नाःस्वस्थैर्द्विघ्नास्तदंशगैः ॥
तथैव ग्रहतुल्यं स्याद्वयोजातिस्वरूपकै ॥ ६ ॥

अपनी उच्च राशि में वक्र गति से जितने ग्रह हों उनकी तिगुनी स्त्रियां कहनी अपनी राशिमें व अपने नवांश में अपने द्रेष्कोण व अपने वर्गोत्तम में जितने ग्रह हों उनकी दुगुनी स्त्रियाँ प्रसूता स्त्री के समीप कहना चाहिये और उन प्रसूतियों की अवस्था, जाति, स्वरूप उन ग्रहों के सदृश कहना ग्रहों का स्वरूप आदि आगे वर्णन करेंगे ॥ ६ ॥

पापैश्च विधवा नारी क्रूरैरपि कुमारिका ।
सौम्यग्रहैश्च सुभगा सूतिकायां विधीयते ॥ ७ ॥

पापग्रहों करके विधवा स्त्री, क्रूर ग्रहों करके कुमारी और शुभग्रहों के योग से सौभाग्यवती अर्थात् सुहागिन स्त्री, इनकी संख्या सूतिकाके समीप कहना ॥ ७ ॥

बालां पूर्णः शतिगुः सोमजेऽपि वृद्धां सौरिः कर्कशां भूमिपुत्रः ॥ आदित्येज्यो सुप्रभूता भृगुश्च कुर्वात्ते स्त्री कर्कशां चापि वृद्धाम् ॥ ८ ॥

लग्न और चन्द्रमा के बीच ग्रहों के योग से जो उपसूतिका ज्ञान कहा सो पूर्ण चन्द्रमा और बुध हो

तो बाला स्त्री, शनि हो तो बृद्धा, मंगल हो तो कलह करने वाला, सूर्य व बृहस्पति हो तो सुन्दर सन्तान वाली, शुक्र हो तो कलह जिसको प्यारा ऐसी और बृद्धा भी कहना ॥ ७ ॥

आषोडशाद्भवेद् बाला तरुणी त्रिंशका मता ।
पंचपंचाशका प्रौढा नारी बृद्धा ततः परम् ॥ ८ ॥

सोलह वर्ष पर्यन्त बाला, तीस तक तरुणा, पचपन वर्षकी प्रौढा, उपरान्त स्त्री बृद्धा हो जाती है ॥ ८ ॥

शब्दो मेषे बृषे सिंहे मिथुने वा तथा तुले ।
घटकन्ययोरर्धशब्दः शेषाः शब्दविवर्जिताः ॥ ९ ॥

यदि मेष, बृष, सिंह, मिथुन तथा तुला इन लग्नों में जन्म हो तो बालक ने शब्द किया अर्थात् बालक रोया और कुम्भ, कन्या लग्न हो तो आधा शब्द किया अर्थात् कुछ रोकर चुप रहा शेष लग्न (कर्क, बृश्चिक, धन, मकर, मीन) हो तो बालक नहीं रोया ऐसा कहना चाहिये ॥ ९ ॥

मेषत्रिपंचाननतौलिलग्ने विस्मृत्य सर्वं बहु रोदितिस्म ॥
स्वल्पंघटेस्त्रीशिशुरन्यलग्नेरुद्याद्धिनोज्ञानवलस्यसत्वात् १०

मेष, मिथुन, सिंह, तुला इन लग्नों में बालक का जन्म हो तो वह बालक सब ज्ञान को भूल कर बहुत रोता है और कुम्भ व कन्या लग्न में उत्पन्न बालक थोड़ा रोदन करता है अन्य (शेष) लग्नों (बृष कर्क, बृश्चिक, धन, मकर, मीन) में उत्पन्न बालक ज्ञान बल के प्रभाव से बहुत नहीं रोता है ॥ १० ॥

मेषासिंहधनुःकर्ककन्यामीने तथा तुले ॥
अन्तरिक्षे भवेज्जन्म शेषे भूमिर्निगद्यते ॥ ११ ॥

मेष, सिंह, धन, कर्क, कन्या, मीन तथा तुला लग्न में जन्म हो तो शय्या पर जन्म कहना और शेष (बृष, मिथुन, बृश्चिक, मकर, कुम्भ लग्न में बालक उत्पन्न हो तो पृथ्वी पर जन्म कहना ॥ ११ ॥

द्वौद्वौक्रियादिन्दुमुखादिदिक्षु द्विमूर्तयःकोणगताभवन्ति ॥
योजन्मकाले सति लग्नवर्त्ता तादृग्गतं स्यात्कुथनंप्रसूत्याः॥

मेषसे दोदो राशि का जन्म लग्न हो तो यथाक्रम से पूर्व आदि चारों दिशाओं में, द्विःस्वभाव राशि लग्न में हो तो यथाक्रम से आग्नेय आदि कोणों में सूतिका

का शयनस्थान कहना अर्थात् मेष, वृष, लग्नसे घर के पूर्व में, मिथुन लग्न से आग्नेय कोण में, सूतिका लग्न से दक्षिण में, कन्या लग्न से नैर्ऋत्य में, तुला वृश्चिक लग्न से पश्चिम में, धनलग्नसे वायव्य में, मकर कुम्भ लग्न से उत्तर में, मीन लग्न से ईशान कोण में सूतिका का शयनस्थान कहना चाहिये ॥ १२ ॥

प्राच्यादिगृहे क्रियादयो द्वौद्वौ कोणगता द्विमूर्तयः ॥
शय्यास्वपि वास्तुवद्वदेत्पादःषट्त्रिनवान्त्यसंस्थितैः ॥१३॥

प्रथम दो बातों का विचार इस श्लोक द्वारा करना इस बालक का जन्म घर के किस भाग में हुआ है दूसरे यह कि शय्या का शिरहाना किस ओर को है सो बिचार ऐसे करना कि मेष वृष के पूर्व मिथुन से अग्निकोण की ओर कर्क सिंहसे दक्षिण, कन्या से नैर्ऋत्यकोण, तुला वृश्चिक से पश्चिम में और धन से वायुकोण, मकर कुम्भ से उत्तर, मीन से ईशानकोण की ओर जन्म व शय्या का शिरहाना कहना। यहाँ छठें, तीसरे, नवें, बारहवें स्थान में शय्या के चारों पांव

कहना अर्थात् बारहवें स्थान में शिरहाने का बाँया पाया, छठें घर से शय्या के पांयते का दहिना पाया, नवेंसे बांयाँ पाया तीसरे घरसे शिरहानेका दहिंना पाया जहां पाप ग्रह निर्बल हो वहांपर प्रसूति का घर वा शय्या का अंग बलहीन टूटा व चिटका जानना और जहां शुभ ग्रह वलवान हो वहां पुष्ट और सुन्दर कहना, मिश्रित होने से सामान्य कहना ॥ १३ ॥

छागे सिंहे वृषे लग्ने वृश्चिके नालवेष्ठितः ॥
नृलग्ने दाक्षिणे पार्श्वे वामे स्त्रीलग्नके तथाः ॥ १४ ॥

मेष, सिंह, बृष बृश्चिक इन लग्नों में बालक का जन्म हो तो नाल लिपटा हुआ जन्म कहना, पुरुष लग्न में दाहिनी ओर तथा स्त्री (सम) लग्न से बाईं ओर लिपटी कहना ॥ १४ ॥

छागे सिंहे वृषे लग्ने तत्स्थो मन्देऽथवा कुजे ।
राश्यंशे सदृशे गात्रे जायते नालवेष्ठितः ॥ १५ ॥

यदि मेष, सिंह वा बृष लग्नों में जन्महो और लग्नोंमें शनि वा मंगल स्थित हो तो लग्नस्थित नवांशक की

शशिके अंगमें नाल लिपटा हुआ कहना अंगकाज्ञान नीचे लिखे चक्रसे जानना परन्तु जिस लग्नमें बालक का जन्म हो वह शिर जानना इत्यादि ॥ १५ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
शिर	मुख	बाहु	हृदय	उदर	कटि	बस्ति	लिंग	ऊरु	जानु	जांघ	चरण

यत्र राहुस्तत्र शिरो मंगलं भूमिखंडनम् ॥
रविस्थाने भवेद्दीपं शनौ लोहं निगद्यते ॥ १६ ॥

जन्म समय लग्न से जहाँ राहु स्थित हो तो उस दिशामें बालकका शिर कहना, जिस दिशामें मंगलहो वहां पर भूमि खंडित अथवा गढ़ा कहना, जहँ सूर्य हो उस दिशा में दीपक कहना, जहां शनि स्थित हो वहां लोहे की स्थिति कहना ऐसे अपनी मतिके अनुसार कहना, यहां जन्मलग्न को पूर्वदिशा, चौथे स्थान को उत्तर दिशा, दशवें स्थान का दक्षिण दिशा, सातवें स्थान को पश्चिम दिशा कल्पना करके चारों कोण भी जान लेना, कोई कोई ऐसाभी कहते हैं कि सूर्य रात दिनमें पूर्व आदि आठों दिशाओंमें घूमते हैं उस समय

संचार वश से जिस दिशा में सूर्य हो उस दिशाम दीपक कहना चाहिये ॥ १६ ॥

चन्द्रात्तैलं ज्ञानमेवं विचार्य बुद्ध्यात्सर्वं सूतिकावेश्मनीह ।
लग्नारम्भे वर्तिकापूर्णदेहंमध्येत्वर्द्धास्वल्पशेषाऽवसाने १७

चन्द्रमा से दीपक के तेलका विचार करना चंद्रमा पूर्ण होतोदीपकमें तेल भराहुआ कहना, मध्यम होतो आधा क्षीण हो तो थोड़ा अथवा चन्द्रमा के अंशों के अनुसार कहना, पूर्ण दीपक में जितने अंश चन्द्रमाके न्यून होते जांय उतनाही तेल न्यून होता जायगा इस प्रकार अपनी बुद्धिसे सूतिकाके घरका सब बिचार करना लग्नसे दीपकी बत्तीका विचार करना सो ऐसे कि लग्नके आरम्भमें जन्म हो तो बत्ती पूर्ण जानना अर्थात् बत्ती उसी समय जलाई गई आधा लग्न व्यतीत हो जानेपर आधा और थोड़े अंश रह गयेहों तो लग्न के अन्त कुछ बत्ती रह गई ऐसा कहना ॥ १७ ॥

चरर्क्षगे रवौ तदा चरप्रदीपकं वदेत् ॥
स्थिरर्क्षगे स्थिरं वदेद् द्विदेहभे द्विधा तदा ॥ १८ ॥

चर राशि में सूर्य हों तो दीपक चलायमान रहा कहना, स्थिर राशि में सूर्यहो तो दीपक एकस्थान में स्थिर रहा, द्विःस्वभाव राशि में सूर्यहो तो चर स्थित अर्थात् एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान पर रख दिया गया ऐसा कहना चाहिये ॥ १८ ॥

चरलग्ने चरो दीपः स्थिरे स्वस्थो च संस्थितः ॥
द्विदेह भे करस्थः स्यादिति केचिद्बुधा जगुः ॥ १६ ॥

चर लग्न में जन्म हो तो दीपक चलायमान स्थिर लग्न में अपने स्थान में स्थिर रहा, और द्विः स्वभाव राशि में हाथ में दीपक रहा, ऐसे कोई २ पण्डितों ने कहा है ॥ १६ ॥

राश्यादिकेचंद्रमसिप्रदीपस्तैलेनपूर्णोऽस्तिवदेद्बुधागमः ॥
तथैवमध्यान्तगते शशांके मध्यत्वमल्पत्वमुपैतिदीपः।२०।

समाधान के अर्थ फिर भी तेल ज्ञान कहते हैं राशि के आदि में अर्थात् देश अंश के भीतर चन्द्रमा हो तो तैलसे परिपूर्ण दीपक कहना, ऐसेही राशि के मध्य अर्थात् ग्यारह अंशसे बीस अंशके भीतर चन्द्रमा हो तो दीपक में आधा तेल कहना, राशि के अंत में

अर्थात् इक्कीसवें अंश से तीस अंशके भीतर चंद्रमाहो तो दीपक में तेल थोड़ा कहना चाहिये ॥ २० ॥

शीर्षोदये विलग्ने मूर्धाप्रसवोऽन्यथोदये चरणौ ॥
उभयोदये च हस्तौ शुभदृष्टौ शोभनोऽन्यथाकष्टं ॥

शीर्षोदय लग्न में जन्महो तो शिरसे और पृष्ठोदय लग्न में जन्महोतो चरण से, उभयोदय लग्नमें जन्महो तो हाथों से जन्म कहना, शिरसे जन्म होना यह है कि प्रथम सिर बाहर निकले यहाँ सिंह, कन्या, तुला, बृश्चिक मिथुन, कुंभ ये शीर्षोदय राशि हैं, मीन उभयोदय है मेष, बृष, कर्क, धन, मकर ये पृष्टोदय राशि हैं लग्नपर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो सुख से नहीं तो कष्ट से जन्म कहना ॥ २१ ॥

पितुर्जातं परोक्षऽस्यात्लग्नमिन्दावपश्यति ।
विदेशस्थस्य चरमे मध्यादभ्रष्टे दिवाकरे ॥ २२ ॥

यदि जन्म समय लग्न को चन्द्रमा नहीं देखे तो उस समय के उत्पन्न हुए बालक का जन्म पिता के परोक्ष (पीछे) कहना और मध्य से भ्रष्ट अर्थात् दशवें स्थान से रहित नवम, अष्टम, एकादश, द्वा-

दश स्थान में सूर्य चरम राशि का हो तो बालक के जन्मसमय पिता विदेश में स्थित कहना ॥ २२ ॥

स्थिरे सूर्येऽष्टमे धर्मलाभे वा चान्त्यसंस्थिते ॥
न पश्येचन्द्रमा लग्नं परोक्षे जायते शिशुः ॥ २३ ॥

सूर्य स्थिर राशि, आठवें, नवें ग्यारहवें वा बारहवें स्थान में हो और चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो भी पिता के पीछे बालक का जन्म कहना परन्तु अपने देश में स्थित परोक्ष कहना ॥ २३ ॥

उदयस्ते जिचामन्दे कुजे वाऽस्तं समागते ॥
स्थिते वान्तः क्षपानाथे शशांकसुतशुक्रयोः ॥ २४ ॥

यदि जन्मलग्न में शनैश्चरहो अथवा सप्तमस्थान में मंगलहो, किंवा बुध और शुक्रके मध्यमें चन्द्रमा स्थित हो तो इन तीन योगोंमें पिताके पीछे बालक का जन्म कहना ॥ २४ ॥

क्रूरर्क्षगतावशोभनौ सूर्यात्समनवात्मजस्थितौ ॥
बद्धस्तु पिता विदेशगःस्वबारा शिवादयो पथि ॥ २५ ॥

यदि पापग्रह क्रूर राशि [मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुंभ] में और सूर्यसे सातवें, नवें, पांचवें स्थान में स्थित हों तो बालक का पिता बन्धन में कहना, यहाँ यदि सूर्य चर राशि में स्थित हो तो परदेश में और स्थिर राशि में हो तो पिता बंधा कहना ॥ २५ ॥

मेषे रक्तं वृषे श्वेतं मिथुने नीलवर्णकम् ॥
कर्कटे श्वेतरक्तं च सिंहे धूम्रं च पाण्डुरम् ॥ २६ ॥
कन्याविचित्रवर्णा च तुले धूम्रप्रवर्तितम् ॥
विर्शं गोवृश्चिके ज्ञेयं पिंगलो धनुषस्तथा ॥ २७ ॥
कर्बुरो मकरे ज्ञेयो वभ्रुवर्णान् वदेत् ॥
मीनवर्णश्रृषे ज्ञेयो राशिवर्णम् वेदद्बुधाः ॥ २८ ॥

मेषमें लाल रंग, वृषमें सफेदरंग, मिथुन में नील रंग, कर्क में सफेद और लाल रंग, सिंहमें धूम्र और पाण्डुवर्ण ॥ २६ ॥ कन्या में विचित्रबर्ण और थोड़े अंश रह गये हों तो (अनेक रंग) और तुला में धूम्रां का सा रंग, बृश्चिक में पीला रंग, धन में

पीला रंग तथा ॥२७॥ मकर में कबरा अर्थात् दोरंग मिला हुआ अथवा काला सफेद रंग जानिये, कुंभमें न्यौलाका सा रंग कहना, मीनमें मछलीका सा रंग जानना, यह राशियोंका रंग पण्डित जन जानें इसका प्रयोजन यहां यह है कि प्रसूती स्त्रीके भोजन का रंग लग्न द्वारा बतावें कोई २ पंडित प्रसूती के वस्त्र का रंग राशि वर्ण द्वारा बतलाते हैं बुद्धि द्वारा यथा योग्य बिचार करके बतलाना चाहिये ॥ २८ ॥

न लग्नमिन्दुंनगुरुर्निरीक्ष्यते न वा शशांकरविणासमागतम्
सपापकोऽर्केणयुतोथवाशशीपरेणजातंप्रवदन्तिनिश्चयात् २९

यदि लग्न और चन्द्रमाको बृहस्पति नहीं देखता हो अथवा चन्द्रमा सूर्य के साथ हों और बृहस्पति की दृष्टि न हो अथवा सूर्य चन्द्रमा दोनों पाप ग्रह (शनि, मंगल) से युक्त हो तो निश्चय करके उस बालक का जन्म (दूसरे) से होवे ऐसा कहते हैं परन्तु यह जार जात विषय बिचार विशेष नहीं

करना चाहिये इसकारण यही केवलएक योग लिखकर परीक्षा तथा बालक के चिन्होंको कहते हैं ॥ २९ ॥

आप्योदयमाप्यगः शशी सम्पूर्णं समवेक्ष्यतेऽथवा ॥
मेषूरणबन्धुलग्नः स्यात्सूतिःसलिले न संशयः ॥३०॥

जन्म लग्न और चन्द्रमा, जलचर राशि में हो अथवा पूर्ण चन्द्रमा लग्नको पूर्ण दृष्टिसे देखे अथवा चन्द्रमा जलचर राशि का दशवें चौथे लग्न में हो तो बालक का जन्म जल के ऊपर कहना ॥ ३० ॥

पूर्णे शशिनि स्वराशिगे सौम्ये लग्नगते गुरौ सुखे ॥
लग्ने जलजेऽस्तगेऽपि वा चन्द्रेपोतगते प्रसूयते ॥ ३१ ॥

पूर्ण चन्द्रमा अपने राशि (कर्क) में हो बुध लग्नमें हो, बृहस्पति चौथे स्थानमें हो तो अथवा लग्न जलचर राशि हो चन्द्रमा सातवें हो तो बालक का जन्म नौका में या पुल के ऊपर कहना ॥ ३१ ॥

उदयोडुपयोर्व्ययस्थिते गुप्त्यां पापनिरीक्षिते शनौ ॥
आले कर्कयुते विलग्नगे सौरा शीतकराक्षितेऽवटे ॥३२॥

लग्न और चन्द्रमा से बारहवें स्थान में शनि हों और पापग्रह देखते हों तो बालक का जन्म कारागार में कहना। तथा वृश्चिक कर्क का शनिश्चर लग्न में हो और चंद्रमा देखता हो तो खाई व खाता में जन्म कहना।३२।

मन्देऽब्जगते विलग्ने बुधसूर्येन्दुनिरीक्षिते क्रमात् ॥
क्रीडाभवनसुरालये प्रवदेज्जन्म च सोषरावनौ ॥ ३३ ॥

यदि शनि जलचर राशि में स्थित होकर लग्न में हो और बुध की दृष्टि हो तो नृत्यशाला में और शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो देवालय में, चन्द्रमा की दृष्टि हो तो ऊषर भूमि में जन्म हुआ जानना।३३।

नृलग्नगं प्रेक्ष्य कुजे स्मशाने रम्ये सितेन्दू गुरुरग्निहोत्रे ॥
रविर्नरेन्द्रामरगोकुलेषु शिल्पालये ज्ञः सवं करोति ॥३४॥

नरराशि में स्थित शनि लग्न में हो और मंगल देखता हो तो स्मशान में और नर लग्नगत शनि को शुक्र चन्द्रमा देखते हों तो सुन्दर दर्शनीय रमणीक

घर में बालक का जन्म कहना, बृहस्पति देखता हो तो हवन मंदिर में, सूर्य देखता हो तो राजमन्दिर वा देवालय अथवा गोशाला में और बुध देखता हो तो शिल्पालय (चित्रकारी व कारीगरी से बने हुए स्थान) में जन्म कहना ॥ ३४ ॥

राश्यंशसमानगोचरे मार्गे जन्मचरे स्थिरे गृहे ॥
स्वत्र्यांशगते स्वमन्दिरे बलयोगात्फलमंशकर्त्त्रयोः ॥ ३५ ॥

जन्म समय लग्न राशि नवांश के समान हो तो भूमि में, चर राशि नवांश में बालक उत्पन्न हो तो मार्ग में, स्थिर राशि नवांशमें जन्म हो तो अपने गृह में बालक का जन्म कहना, राशि और नवांश दोनों में जो बली हो उससे फल कहना, परन्तु जब पूर्वोक्त योगों का अभाव हो अर्थात् पूर्व कहे हुये योगों में से कोई योग न हो तब कहना ॥ ३५ ॥

आरार्कजयोस्त्रिकोणयोश्चंद्रेऽस्ते च विसृज्यतेऽम्बया ॥
दृष्टेऽमरराजमंत्रिणा दीर्घायुःसुखभाक् च स स्मृतः ॥ ३६ ॥

मंगल और शनि त्रिकोण स्थान (६ । ५) में स्थित हों और चन्द्रमा सातवें घर में हो तो उस समय का उत्पन्न बालक अपनी मातासे जुदा हो जाता है तथा ऐसे योग में चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो माता करके त्यागा हुआ भी बालक दीर्घ आयु वाला और सुखी होता है ॥ २६ ॥

पापेक्षिते तु हिमगावुदयं कुजास्ते
त्यक्तं विनश्यति कुजार्कजयोस्तथाये ॥
सौम्यो च पश्यति तथाविधहस्तमेति
सौम्येतरेषु परहस्तगतो गतायुः ॥ २७ ॥

लग्न में चन्द्रमा स्थित हो और उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, मंगल सातवें घर में हो तो माता से त्याग किया बालक मृत्यु को प्राप्त होता है तथा लग्न में स्थित चन्द्रमा पर पापग्रहों की दृष्टि हो और मंगल शनि ग्यारहवें स्थान में हों तो भी पूर्वोक्तफल कहना यदि पूर्व योग हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि

हो तो उसी ग्रह के वर्ण (ब्राह्मणादि) के हाथ में वह बालक बहुत समय तक जाता है तथा यदि पापग्रह और शुभग्रह दोनों देखते हों तो किसी के हाथ में जाय पर मर जाता है ॥ ३७ ॥

चतुर्थे कर्मणि सौम्या सुखेन प्रसवंकराः ।
त्रिकोणेऽस्तगते पापाः कष्टतः प्रसवंकराः ॥ ३८ ॥

जन्म समय, लग्न से चौथे और दसवें स्थान में शुभ गृह स्थित हो तो सुख से प्रसव होता है अर्थात् सुख पूर्वक बालक उत्पन्न होता है और त्रिकोण होते समय पाप गृह देखते हों तो बहुत कष्ट होता है ॥३८॥

पितृमातृग्रहेषु तद्भ्रात्ताशालादिषु नीचगैः शुभः ॥
यदि नैकगस्तु वीक्षिप्तौ लग्नेन्दू विजने प्रसूयते ॥ ६ ॥

पिता संज्ञक गृह, [सूर्य, शनि] बली हों तो पिता अथवा पिता सम्बन्धी ताऊ चाचा आदि के घर जन्म कहना और माता संज्ञक ग्रह, (चन्द्र शुक्र बली हों

तो मामी व मातृसंज्ञक मौसी मामीं के घर बालक का जन्म जानना, यदि शुभग्रह नीच राशि में हों तो वृत्त में, वृत्त के तले वा काठ के घर में तथा पर्वत पर नदी के समीप जन्म कहना और लग्न व चन्द्रमा को कोई भी ग्रह न देखता हो तो बालक का जन्म निर्जन स्थान में कहना, तथा लग्न व चन्द्रमा को अनेक ग्रह देखते हों तो बहुत से मनुष्यों के समुदाय में जन्म कहना ॥ ३६ ॥

मंदत्तांशे शशिनि हिबुके मन्ददृष्टेऽब्जगे वा ।
सद्युक्तं वा तमसि शयनं नीचसंस्थैश्च भूमौ ॥
यद्वाद्राशिर्व्रजति हरिजं गर्भमोत्तस्तु तद्वत् ।
पापैश्चन्द्रात्स्मरसुखगतैः केशमाहुर्जनन्याः ॥ ४० ॥

बालक के जन्म समय चन्द्रमा शनिश्चर के राशि वा नवांशक में हो वा चौथे स्थान में स्थिर चन्द्रमा शनियुक्त हो तो अन्धेरे में जन्म कहना, यदि इन योगों में सूर्य बलवान हो और मङ्गल की दृष्टि हो तो

सब योगोंका फल कट जाता है अर्थात् सब लोग रहते भी घर में जन्म समय दीप कहना, अथवा चन्द्रमा लग्न में वा चौथे नीच (८) राशि के हों तो पृथ्वी पर जन्म कहना, शीर्षोदय राशि जन्म लग्न में हो तो जन्म होने के समय बालक का मुख ऊपर का, पृष्ठोदय लग्न होतो पृथ्वी की ओर अर्थात् नीचे को, और उभयोदयी लग्न अर्थात् मीन लग्न में हो तो जन्म तिरछा कहना तथा लग्न नवांश वा लग्नस्थित ग्रह वक्री हों तो उलटे पैर से बालक का जन्म कहना और पापग्रहयुक्त चंद्रमा सातवें चौथे स्थानमें होतो जन्म समय बालककी माताको कष्ट हुआ कहना ॥ ४० ॥

स्नेहः शशांकादुदयाच्च वर्तिर्दीपोऽर्कयुक्तर्त्तवशाचराद्यः ॥
द्वारश्चतद्वास्तुनिकेन्दुसंस्थैर्ज्ञेयं ग्रहैर्वीर्यसमन्वितैर्वा । ४१॥

चंद्रमा की राशि से दीपक में का तेल कहना यह रीति पूर्व कह चुके हैं । जन्म लग्न से दीपककी बत्ती

का विचार कहना इसका क्रम भी पूर्व कह आये हैं संयुक्त राशि के वश से दीपक का विचार कहना जहां जिस राशि में सूर्य हो उस राशि के समान तेल का रंग कहना, यदि वह राशि शुभग्रहयुक्त हो तो तेल निर्मल और पाप ग्रहयुक्त हो तो तेल मलीन कहना। केन्द्र में जो ग्रह हो उसकी दिशा की ओर सूतिका के घर का द्वार कहना, अनेक ग्रह केन्द्र के हों तो उनमें से जो ग्रह बली हो उस ग्रह की दिशा का द्वार कहना ॥ ४१ ॥

लग्नेन्दुमध्ये शनिमिष्टतैलं सूर्यें भवेत्तस्य घृतस्य दीपम् ॥
शेषग्रहास्तत्कटुकं च तैलं एवं प्रसूता खलु दीपमाह॥४२॥

लग्न और चन्द्रमा के मध्य में शनि स्थित हो तो दीपक में मीठा तेल कहना, सूर्य हों तो दीपक में घी जानना और शेष (मं. बु. बृ. शु.) हों तो कडुवा तेल कहना यही दीपक के तेल का विचार है ॥ ४२ ॥

जीर्णं संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दग्धं नवं शीतगौ
काष्ठाढ्यं न दृढं रवौ शशिसुते तन्नैकशिल्पोद्भवं ॥
रम्यं चित्रयुतं नवं च भृगुजे जीवं दृढं मन्दिरं
चक्रस्थैश्चयथोपदेशरचनासामंतपूर्वां वदेत् ॥ ४३ ॥

जन्मसमय में शनिश्चर बली हों तो प्रसूती स्त्री का घर पुराना और अच्छा बना कहना, मंगल बलवान हों तो दग्ध कहना, चन्द्रमा बलवान हों तो नवीन अथवा लीपापोता कहना, सूर्य बलवान हों तो रमणीय कारीगरी से बना कहना, शुक्र बलवान हों तो सुन्दर चित्रकारी सहित कहना, बृहस्पति बली हों तो पुष्ट घर कहना, जिस ग्रह से घर का यह बिचार किया है उसके निकट आगे पीछे जितने ग्रह हों उतने कोठे उस घर में आगे पीछे कहना । यहां शाला का प्रमाण इस प्रकार कहना कि बृहस्पति उच्च वा दशम भाव में हों तो तीन चार कोठा घर का कहना, लग्न में धन राशि बली हों तो तीन कोठा

का, द्वि-स्वभाव राशि बलवान हों तो शाला का घर कहना, अपनी बुद्धि से घर के निकट शिवालय, कूँआ, वृक्ष आदि ग्रहों के अनुसार वर्णन करना ।४३।

लग्ननवांश पति तुल्यतनुः स्याद्वीर्ययुतग्रहतुल्यवपुर्वा ॥
चन्द्रसमेतनवांशपवर्णः कादिविलग्नविभक्तभगात्राः॥४४॥

जन्म समय लग्न में जो नवांश हो उसके स्वामी के समान बालक का स्वरूप कहना, अथवा जो ग्रह बहुत बलवान हो उसके समान शरीर का आकार कहना, ग्रहोंका स्वरूप आगे वर्णन करेंगे। चंद्रमा जिस नवांश पर हो उसके स्वामी के सदृश बालक का रंग कहना "रक्तश्यामो भास्करो ,, इत्यादि श्लोक आगे लिखेंगे यदि दीर्घ राशि का स्वामी दीर्घ राशि में हो तो उस राशि के तुल्य अंग दीर्घ हो, वैसे ही ह्रस्व में ह्रस्व, मध्य में मध्य जानना ॥ ४४ ॥

रक्तश्यामोभास्करोगौरइन्दुर्नात्युच्चांगी रक्तगौरश्च वक्रः ॥
दूर्वश्यामो ज्ञो गुरुर्गौरगात्रःश्यामःशुक्रो भास्करि कृष्णदेहः

सूर्य का रङ्ग रक्त श्यामवर्ण, चन्द्रमा का गौर, मङ्गल का कमलके समान लाल और गोरा और शरीर छोटा, बुध का दूर्वा के दल के समान, बृहस्पति का गोरा, शुक्र का श्यामवर्ण अर्थात् न बहुत गोरा न काला, और शनिश्चर का काला शरीर जानना ॥ ४५ ॥

मधुपिंगलदृग्वाक्चतुरस्रतनुः।पित्तप्रकृतिसविताऽल्पकाच ।
तनु वृत्ततनुर्बहुवातकफःप्राज्ञश्च शशी मृदुवाक्शुभदृक् ॥

सूर्य का स्वरूप शहत के रंग के सदृश नेत्र और चौकोने शरीर, पित्त प्रकृति, छोटे और थोड़े २ केश ऐसा वात पित्त प्रकृति, बुद्धिमान और कोमल वाणी, सुन्दर मनोहर नेत्रवाला ऐसा स्वरूप जानना ॥ ४६ ॥

क्रूरदृक् तरुणमूर्तिरुदारः पैत्तिकः सुचपलः कृशमध्यः ॥
क्लिष्टवाक्सततहास्वरुचिज्ञः पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च ॥४७॥

क्रूर दृष्टि, नित्य युवा अवस्था, उदारचित्त, पित्त प्रकृति, चंचल स्वभाव, बीच का अंग दुबला अर्थात् पतला, ऐसा मङ्गल का स्वरूप है और बुध का स्वरूप

सुन्दर, गद्गद्वाणी बारम्बार हँसनेवाला, मसखरा बात पित्त कफ प्रकृतिवाला जानना ॥ ४७ ॥

बृहत्तनुःपिंगलमूर्द्धजेक्षणो बृहस्पतिः,श्रेष्ठमतिः कफात्मकः।
भृगुःसुखी कान्तवपुस्सुलोचनःकफानिलात्मा ।सितवर्णमूर्द्धजः

बहुत लम्बा शरीर, और लम्बे लम्बे केश भूरे नेत्र, उत्तम बुद्धि, कफ प्रकृति, ऐसा बृहस्पति का स्वरूप है और शुक्र का स्वरूप सुखी, सुन्दर कान्ति वाला शरीर, दर्शन योग्य नेत्र, कफ वात प्रकृति टेढ़े और सफेद शिर के बाल ऐसा जानना ॥ ४८ ॥

मन्दालसश्च कपिलःकृशदीर्घगात्रः
स्थूलद्विजःपरुषरोमकचोनिलात्मा ॥
स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथ शुक्रवसा च मज्जा
मन्दाऽर्कचन्द्रबुधशुक्रसुरेज्यभौमाः ॥ ४९ ॥

शनिश्चर का स्वरूप आलसी, कंजे नेत्र, दुबला और ऊंचा शरीर, नाक और दांत मोटे, रूखे केश, बातप्रकृतिवाला कहा है, अब ग्रहों का धातु वर्णन करते हैं, शनि धातु नस, सूर्य का हड्डी, चन्द्रमा का

रुधिर, बुध का त्वचा, शुक्र का वीर्य, बृहस्पति का मेदा और मंगल का मज्जा जानना ॥ ४६ ॥

कंद्रेक्त्वश्रोत्रनसाकपोलहननोवक्त्रे च होरादयः
ते कंठांशुकबाहुपार्श्वहृदये क्रोडानि नाभिस्ततः ॥
वास्तिःशिश्नगुदे ततश्च वृषणावूरू ततो जानुनी
जंघोंघ्रीत्युभयत्रवाममुदितैर्द्रेष्काणभागैस्त्रिधा ॥५०॥

जन्मलग्न के द्रेष्काण से तीनभागों में चिन्ह आदि होते हैं। यदि लग्न के पहला द्रेष्काण हो तो लग्नशिर, दूसरा बारहवां घर दोनों नेत्र, तीसरा ग्यारहवां घर दोनों कान, चौथा दसवां घर दोनों नासिका, पांचवां नवां घर दोनों गाल, छठा अठवां स्थान ठोढ़ी, सातवां घर मुख कहिये और लग्न का दूसरा द्रेष्काण हो तो लग्न कण्ठ, दूसरा बारहवां घर दोनों कान्धे, तीसरा ग्यारहवां घर दोनों बाहु, चौथा दशवां दोनों बगल, पांचवां नवां घर हृदय, छठां आठवां घर पेट, सातवां,

घर नाभि तथा लग्न का तीसरा द्रेष्काणहो तो लग्न बस्ति कहिये, पेडू, दूसरा बारहवां घर लिंग और गुदा तीसरा ग्यारहवां घर बृषण [अंडकोश] चौथा दशवां घर ऊरू, पाँचवां नवां घर जानु, छठां आठवां घर घुटना, सातवां घर चरण जानना, यहाँ लग्न से सातवें घर के आधे भाग पर्यन्त बाँया अंग जानना और सप्तमार्ध से बारहवें भाग पर्यन्त दहिना अंग जानना ॥ ५० ॥

तस्मिन्पापयुते व्रणं शुभयुतं दृष्टं च लक्ष्मादिशे-
त्स्वर्क्षांशे स्थिरसंयुतेषु सहजःस्यादन्यथाऽगन्तुकः ॥
मन्देश्माऽनिल जोऽग्निशस्त्रविषजा भौमे बुधे भूर्भुवः ।
सूर्ये काष्ठचतुष्पदेषुहिमगौ शृंग्यब्जजोऽन्यौ शुभम् ॥ ५१ ॥

पूर्वोक्त द्रेष्काण के विभाग से अंगों को जान कर जिस राशि में पाप ग्रह हो या जिस राशि पर पापग्रह स्थित हो वहाँ व्रण (फोड़ा फुन्सी, घाव कहना) और शुभग्रह युक्त हो वा शुभग्रह देखता हो तो चिन्हादि

कहना, चिन्ह में लहसन, तिल मस्सा आदि कहना तथा व्रण व चिन्ह करने वाला ग्रह अपने राशि नवांश व स्थिर राशि में होतो जन्मही से चिन्ह कहना इससे अन्यथाही अर्थात् चर राशि नवांश में होतो वह पीछे से चिन्ह होगा जो शनि व्रण करने वाला हो तो पत्थर वायु वा अग्नि द्वारा चिन्ह कहना, मंगल होतो अग्नि हथियार वा विष द्वारा चिन्ह कहना, मंगल हो तो पृथ्वी पर गिर कर व्रण हो सूर्य हो तो काठ का चोट वा किसी चौपाये पशु से ब्रण कहना, चन्द्रमा हो तो सींग वाले पशु से वा जलचर जीव से व्रण आदि कहना अन्य ग्रह शुभ जानना ॥ ५१ ॥

समनुपातिता यस्मिन्भागे त्रयः सबुधाग्रहा
भवतिनियमात्तस्या वाप्तिःशुभेष्वशुभेऽपि वा ॥
ब्रणकृदशुभः षष्ठेदेहतनोर्भसमाश्रिते
तिलमशककैर्दृष्टःसौम्यैर्युतश्च सलक्ष्मवान् ॥५२॥

जिस भाग में बुध सहित तीन ग्रह स्थित हों उस

अंगमें शुभाशुभ चिन्ह अवश्य होता है नौ ग्रहों में जो ग्रह अधिक बलवान हो उसकी दशा में चिन्ह वा व्रण जानना छठें घर में पाप ग्रह हो तो देह में शिर मुख बाहु इत्यादि चक्र पूर्व के लिख चुके हैं उस क्रम से व्रण आदि कहना पापग्रह शुभग्रह युक्त हो तो लहसन आदि चिन्ह करने वाला चिन्ह जानना ॥ ५२ ॥

दशमे बुधजीवौ च सूर्यभौमौ च कंटके ॥
तृतीयैकादशे पापे बालकस्य षडंगुली ॥ ५३ ॥

दशवें घर में बुध बृहस्पति हों केन्द्र १।४।७।१० में सूर्य और मंगल हों, तीसरे ग्यारहवें घर में पापग्रह हों तो बालक को छः अंगुली कहना ॥ ५३ ॥

द्वादशे चन्द्रे भौमो वा वामदेत्रं विनश्यति ॥
द्वादशे रविराहू च दत्त्वचक्षुर्विनाशयेत् ॥ ५४ ॥

बारहवें घर में चन्द्रमा व मंगल हों तो बायां नेत्र विनाश करता है और बारहवें स्थान में सूर्य व राहु हो तो दहिना नेत्र बिनाश होता है ॥ ५४ ॥

अर्कसुतः कुजो राहु पंचमस्थः प्रसूतये ॥
लशुनं वामकुक्ष्यां च गर्गाचार्येण भाषितम् ॥ ५५ ॥

शनि मंगल राहु जन्म समय पांचवें स्थान में होंतो बाँयें कोख में लहसन गर्गाचार्य ने कहा है ॥

सिंहलग्ने यदा जातो यामित्रे च शनैश्चरः ॥
ब्रह्मपुत्रापि संजातो म्लेच्छो भवति बालकः ॥ ५६ ॥

यदि सिंह लग्न में जन्म हो और सातवें स्थानमें शनि हो तो ब्राह्मण के घरमें जन्म होने पर भी वह बालक म्लेच्छ होता है ॥ ५६ ॥

सहजस्थो यदा शुक्रः सिंह मेषे बृहस्पतिः ॥
दशमे रविभौमौ च मूको भवति बालकः ॥ ५६ ॥

तीसरे स्थान में शुक्र हो सिंह व मेषका बृहस्पति हो दशवें घर में सूर्य मंगल हो तो बालक मूक (गूंगा) हो जाता है ॥ ५७ ॥

सुतमदननवान्त्यरन्ध्रलग्नेष्वशुभयुतांमरणामशीतरश्मि ॥
भृगुसुतशशिपुत्र वेदपूज्यैर्यदिवालोनविलोकितो युतो वा ॥

पांचवें, सातवें, नवें बारहवें, आठवें, और लग्न के किसी स्थान में पापग्रहयुक्त क्षीण चन्द्रमा हो और चन्द्रमा को बलवान शुक्र, बुध, बृहस्पति इनमें से कोई शुभग्रह न देखताहो तो वह बालक मरजावे॥५८॥

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षे यदा निशि ॥
षष्ठाष्टमे भवेच्चन्द्रः सर्वारिष्टं निवारयेत् ॥५६॥

जो कृष्णपक्ष में दिनको और शुक्लपक्ष में रात्रि को जन्म हो और छठवें, आठवें स्थान में चन्द्रमा हो तो सब प्रकार के अरिष्टों को निवारण करे ॥५६॥

चन्द्राष्टमे च धरणीसुतसप्तमं च राहुर्नवं च शनि जन्म गुरुस्तृतीये । अर्कस्तु पंच भृगु षष्ठ बुधश्चतुर्थे जातो न जीवति नरः प्रवदन्ति पूर्वे ॥६०॥

चन्द्रमा आठवें और मंगल सातवें स्थान में राहु नवें घर में हो शनि लग्न में हो बृहस्पति तीसरे घरमें हो सूर्य पांचवें शुक्र छठें बुध चौथे हो तो बालक नहीं जीवे, ऐसा पूर्व आचार्यों ने वर्णन किया है ॥६०॥

लग्ने शुक्रः बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ॥
दशमोऽगारको नैव स जातः किं करिष्यति ॥६१॥

जिसके जन्मकाल में लग्न विषे बुध शुक्र न हों, और केन्द्र में बृहस्पति नहीं हों एवं दशम स्थान में मंगल न हो तो वह बालक क्या करेगा अर्थात् उसका जन्म निरर्थक जानना ॥६१॥

मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ॥
दशमोऽङ्गारको यस्य स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥६२॥

जिसके जन्म समय शुक्र बुध मूर्ति में हों और केन्द्र १४।७।१०। में बृहस्पति हों, तथा जिसके दशवें घर में मंगल हो, उस बालक को अपने कुल में दीपक समान जानना ॥६२॥

लग्नस्थाने यदा सौरि षष्ठे भवति चन्द्रमाः ॥
कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥६३॥

लग्नस्थान में शनि हों, छठें स्थान में चन्द्रमा हों और सातवें स्थानमें मंगलहों उसका पिता नहीं जीता।

षष्ठे च द्वादशेराशौ यदा पापग्रहो भवेत् ॥
तदा मातुर्भयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥६४॥

जो छठें और बारहवें घर में पापग्रह होतो माता

को अरिष्ट जानना, चौथे दशवें स्थान में पापग्रह हो तो पिताको अरिष्ट जानना चाहिये ॥ ६४ ॥

दशमस्थो तथा भौमः शत्रुक्षेत्रस्थिता यदि ॥
म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥ ६५ ॥

यदि दशम स्थान में मंगल हो और शत्रु की राशि में हो तो उस बालक का पिता शीघ्र मर जाता है इसमें संशय नहीं करना चाहिये ॥ ६५ ॥

लग्ने जीवो धने मन्दो रविभौमस्तथा बुधः ॥
विवाहसमये तस्य बालस्य म्रियते पिता ॥ ६६ ॥

लग्न में बृहस्पति, दूसरे स्थान में शनि, सूर्य मंगल तथा बुध हो तो उस बालक के बिवाह समय में उसका पिता मर जाता है ॥ ६६ ॥

पातालस्थो यदा राहुश्चन्द्रः षष्ठाष्टमेऽपि च ॥
पापदृष्टोपि शेषेण सद्यः प्राणहरः शिशोः ॥ ६७ ॥

जो पाताल (सातवें) स्थान में राहु हो और छठें, आठवें घर में चन्द्रमा हों, शेषग्रहों की पापदृष्टि हो तो बालक का प्राण शीघ्र ही हर जावे ॥ ६७ ॥

जन्मलग्ने यदा राहुः षष्ठो भवति चन्द्रमाः ॥
जातो मृत्युमवाप्नोति कुदृष्ट्यां त्वपमृत्युना ॥६८॥

जो जन्म लग्न में राहु और छठें स्थान में चन्द्रमा हों, जन्म लग्न पर किसी ग्रह की कुदृष्टि हो तो बालक की अकाल मृत्यु होती है ॥ ६८ ॥

सिंहलग्ने यदा भौमः पंचमे च निशाकरः ॥
व्ययस्थाने यदा राहुस्स जातः कुलदीपकः ॥६९॥

सिंहलग्न में मंगल हो और पांचवें चन्द्रमा हों बारहवें राहू हों तो बालक अपने कुल में दीपक समान होता है ॥ ६९ ॥

लग्ने वा सप्तमे भौमः पंचमे च दिवाकरः ॥
व्ययस्थाने यदा राहुर्विख्यातः स न संशयः ॥७०॥

लग्न में व सातवें मंगल हों और पांचवें सूर्य हों और जो बारहवें राहु हों तो बालक निस्सन्देह जगत में प्रसिद्ध मनुष्य होता है ॥ ७० ॥

त्रिभिः स्वस्थैर्भवेन्मंत्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ॥
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तगतैर्जडः ॥ ७१ ॥

जो बालकके जन्म समय तीन ग्रह अपने घरमें स्थित हों तो वह बालक मंत्री हो और तीन ग्रह उच्चके होंतो राजा और तीन ग्रह नीचे होंतो दास हो, तीन ग्रह अस्त होंतो वह बालक जड़ (मूर्ख होवे) ॥ ७१ ॥

शनिक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा शनिः।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि ॥ ७२ ॥

जो शनि के घर में सूर्य हों और सूर्य के घर में शनि हो तो बारहवें वर्ष में देव से रक्षित बालक भी मर जाता है ॥ ७२ ॥

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शंकरः ॥ ७३ ॥

जो जन्म लग्न में मङ्गल हों और आठवें घर में बृहस्पति हों तो बारहवें वर्ष में यदि महादेव भी रक्षा करें तो भी बालक मृत्यु को प्राप्त होना है ॥ ७३ ॥

षष्ठाष्टमस्तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः।
चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शंकरः ॥ ७४ ॥

जो जन्म समय छठें, आठवें तथा मूर्त्ति में बुध

हो तो शंकर भी रक्षा करें तो भी चौथे वर्ष में वह बालक मर जाता है ॥ ७४ ॥

भौमक्षेत्रे यदा जविः षष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः ॥
अष्टवर्षेऽपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ॥ ७५ ॥

जो मंगल के घर में बृहस्पति हों और छठें वा आठवें स्थान में चन्द्रमा हो तो ईश्वर से रक्षित भी बालक आठवें वर्ष में मर जाता है ॥ ७५ ॥

दशमेऽपि यदाराहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत् ॥
वर्षे च षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्हि तस्य च ॥ ७६ ॥

जन्म समय दशवें घर में राहु होंतो बालककी सोलहवें वर्ष में मृत्यु जानना ऐसा पंडितों ने कहा है ।७६।

अग्रजातं रविर्हन्ति पृष्ठजातं शनैश्चरः ॥
जाते जातं कुंजो हन्ति सहजस्थो भवेद्यदि ॥ ७७ ॥

तीसरे स्थान में स्थित सूर्य बड़े भाई का नाश करते हैं और तीसरे स्थान में स्थित शनैश्चर उसके पीठ पर के भाई को और मंगल तीसरे स्थान में होतो उसके पीठ पर जो बालक उत्पन्न हो वह नाश होजावे ॥ ७७ ॥

इनांकाक्षांत्तात:शशिमुखग्रहान्मातृकथित:
कुजाद्भ्रातृस्थानात्सहजइनपुत्राष्टमगृहात् ॥
मृतिर्ज्ञात्षष्टं स्याद्रुजहतिकमामातुलमपि
गुरापुत्रात्पुत्रोसितसदनभादारफलम् ॥ ७८ ॥

यहां ग्रहों का फल कहते हैं सूर्य से नवम स्थान द्वारा पिता सम्बन्धी शुभाशुभ फल विचार करना, चन्द्रमा से चौथे भाव द्वारा माता सम्बन्धी विचार करना, मंगल से तीसरे स्थान द्वारा भाई का विचार करना, शनि से आठवें स्थान द्वारा मृत्यु का विचार करना, बुध से छठें स्थान द्वारा रोग और मामा का भी विचार करना, बृहस्पति से पांचवें स्थान द्वारा पुत्र सम्बन्धीका शुभाशुभ विचार करना, शुक्रसे सातवें स्थान द्वारा स्त्री का शुभाशुभ फल विचार करना चाहिये ॥ ७८ ॥

यद्भावनाथो रिपुरन्ध्ररिष्फदुःस्थानपोदय भावनास्थितोवस
तद्भाव नाशंकथयन्तितज्ज्ञाःशुभेक्षितेतद्भवनस्यसौख्यम् ॥

जिस भाव (स्थान) का स्वामी ६ । ८ । १२ घरम हो अथवा दुष्टस्थान ६।८।१२ का स्वामी जिस घर में

उस भावफल का नाश कहना, जो शुभग्रहों की दृष्टि उस भाव में हो तो उस भाव के सुख को करे ॥ ७६ ॥

योयो भावःस्वामि दृष्टो युतो वा-
सौम्यैर्वास्यात्तस्यतस्याऽस्तिवृद्धिः ॥
पापैरेवंतस्य भावस्यहानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतोवा ८०

जिस २ भाव का स्वामी शुभग्रह अपने स्थान को देखता हो और अपने स्थान में स्थिर हो तो उस २ भाव की बृद्धि करता है एवं जिस २ भाव का स्वामी पापग्रह हो और उस २ भाव को देखता हो अथवा उस भाव में स्थित हो तो उस २ भाव की हानि करता है यह प्रश्न समय अथवा जन्म समय में अवश्य देखना चाहिये ॥ ८० ॥

❀ इति ❀

पुस्तक मिलने का पता—
प्रो०-बुन्नीबाबू ऐण्ड ब्रादर्स ।
स्टार आफ इण्डिया प्रेस बुकडिपो ।
पांडे हौली, बनारस सिटी ।

काशी गंगामृत

भाइयो यह काशी गंगा अमृत एक अनमोल दवा है जिसका गुण हम कहाँ तक बयान करें फिर भी इसके खास खास गुणों से आप लोगों को मालुम करा देना चाहता हूं। हर आदमी अच्छी तरह जानता है कि जितनी बिमारी पैदा होती है टट्टी खुलकर न होने से जिसके कारण खाना भी हज़म नहीं होता भूख भी कम लगती है दिमाग़ पर गरमी और हाथ पांव तमाम बदन की ताक़त में कमी होती जाती है कारण ये कि खाना के हजम न होने से खूनका पैदा होना कम होजाता है।

१–काशी गंगाअमृत के फायदे, खानेको बहुत अच्छी तरह हज्म करके टट्टी का साफ लाना खून का पैदा होना दिल दिमाग़ फेफड़ा जिगर पेड़ु के मसाना व पेशाब के साफ लाने और ताक़त पैदा करने में लाजवाब है।

२–हरजगहकी रगों को बहुत अच्छी ताक़त व धात को पुष्ट करके क़ूवते मर्दानगी को बेहद बढ़ा देता है। यह दवा खाना खाने के बाद थोड़े पानी के साथ पीली जाती है दवा के इस्तेमाल करने का तरीका शीशी के साथ जाताहै एक शीशी में एक महीने की दवा होती है।

जिसकी क़ीमत मय महसूल डाक के। २॥) रु०

स्टार आफ इण्डिया प्रेस. पांडे हौली बनारस सिटी.।